AIRO JOURNALS
Free / Unpaid
Peer Reviewed
Multidisciplinary
National

ISSN: 2321-3914
Volume: 4 Issue:3
December 2023
Impact Factor: 11.9
Subject: Sanskrit

सूर्य पूजा की खोजः पौराणिक और वैदिक परंपराओं को जोड़ना

KRISHNA MALLIK
Research Scholar
AR19BPHDSA004Enrollment No.SANSKRIT

DECLARATION: I AS AN AUTHOR OF THIS PAPER /ARTICLE, HERE BY DECLARE THAT THE PAPER SUBMITTED BY ME FOR PUBLICATION IN THE JOURNAL IS COMPLETELY MY OWN GENUINE PAPER. IF ANY ISSUE REGARDING COPYRIGHT/PATENT/OTHER REAL AUTHOR ARISES, THE PUBLISHER WILL NOT BE LEGALLY RESPONSIBLE. IF ANY OF SUCH MATTERS OCCUR PUBLISHER MAY REMOVE MY CONTENT FROM THE JOURNAL WEBSITE. FOR THE REASON OF CONTENT AMENDMENT /OR ANY TECHNICAL ISSUE WITH NO VISIBILITY ON WEBSITE /UPDATES, I HAVE RESUBMITTED THIS PAPER FOR THE PUBLICATION.FOR ANY PUBLICATION MATTERS OR ANY INFORMATION INTENTIONALLY HIDDEN BY ME OR OTHERWISE, I SHALL BE LEGALLY RESPONSIBLE. (COMPLETE DECLARATION OF THE AUTHOR AT THE LAST PAGE OF THIS PAPER/ARTICLE

अमूर्त

यह पेपर पुराणिक धर्म के संदर्भ में सूर्य पूजा के महत्व का अन्वेषण करता है और इसे वैदिक परंपरा से जोड़ता है। सूर्य, सौर देवता, हिन्दू ब्रह्मांड और आध्यात्मिकता में एक केंद्रीय स्थान धारण करता है। वेदों और पुराणों के पाठिक स्रोतों की जांच के माध्यम से, साथ ही विद्वानों के विवेकों के द्वारा, यह अध्ययन सूर्य पूजा की सामान्य विशेषताओं, इसके समयांतरण और वैदिक अनुष्ठानों और धारणाओं के साथ उसके संबंध को स्पष्ट करता है। हिंदू धार्मिक प्रथाओं और विश्वदृष्टिकोण को आकार देने में सूर्य पूजा के धार्मिक, दार्शनिक और सांस्कृतिक पहलुओं के विश्लेषण से, यह पेपर हमारे ज्ञान को गहरा करने का उद्देश्य रखता ळें

कीवर्डः सूर्य पूजा, पौराणिक धर्म, वैदिक परंपरा, हिंदू धर्म, ब्रह्मांड विज्ञान, अनुष्ठान, प्रतीकवाद, दर्शन।

परिचय

सूर्य, प्रकाशमय सौर देवता, हिन्दू ब्रह्मांड और आध्यात्मिकता में एक केंद्रीय स्थान धारण करता है, हजारों वर्षों के दौरान श्रद्धा और पूजा को उत्प्रेरित करता है। सूर्य की पूजा बस भौतिक सूर्य की उपासना से परे हैय यह प्राचीन धार्मिक परंपराओं में उदार आध्यात्मिक संबंध को दर्शाता है। यह अध्ययन पुराणिक धर्म में सूर्य पूजा की जटिल विविधता में खोज करता है, उसकी सामान्य विशेषताओं का परीक्षण करता है और वैदिक परंपरा के साथ उसके जटिल संबंध को स्पष्ट करता है।

हिन्दू धर्म में, देवी–देवताओं की पूजा प्राचीनकाल से ही धार्मिक अभ्यास का एक अभिन्न हिस्सा रही है। सूर्य, प्रकाश और जीवन के संदेशवाहक के रूप में पुजित होता है, जो सबसे पहले हिन्दू ग्रंथ, वेदों में उल्लेखित है, जहां प्रशंसा की गई उसकी उज्ज्वल प्रतिष्ठा के साथ गहनता में गहराई छुपी है। ये हिम्न न केवल सूर्य की भौतिक गुणधर्मों की प्रशंसा करते हैं बल्कि उसे आद्यात्मिक व्याख्याओं का प्रतीक भी बताते हैं, जो उसे ब्रह्मांडीय व्यवस्था, बोध, और प्राणिकता का प्रतीक बताते हैं।

AIRO JOURNALS
Free / Unpaid
Peer Reviewed
Multidisciplinary
National
ISSN: 2321-3914
Volume: 4 Issue:3
December 2023
Impact Factor: 11.9
Subject: Sanskrit

हिंदू धर्म के समय के साथ विकसित होने के साथए पुराणिक परंपरा एक पौराणिक कथाओंए धार्मिक अनुभूतियोंए और भक्तिपूर्ण उत्साह का एक जल स्रोत के रूप में सामने आई। इस बड़े साहित्यिक भंडार में, सूर्य एक बहुपहलु देवता के रूप में सामने आता हैए जिसे दिव्य कार्यों और ब्रह्मांडीय नाटकों की कथाओं में संरक्षित किया गया है। पुराणिक पाठों में सूर्य के चरित्र को जटिल कथाओं के साथ सजाया गया हैए जिसमें उसे प्रसिद्ध वंशों का जनकए वरदानों का वितरकए और आकाशीय चक्रों का संदेशवाहक प्रतित किया गया है।

पुराणिक कथाओं की धरोहर के बावजूदए सूर्य की पूजा वैदिक अनुष्ठानों और अवधारणाओं में मजबूती से निरंतर रहती है। पुराणिक सूर्य पूजा और इसकी वैदिक पूर्ववत युगानुक्रम में संबंध की एक पारस्परिक संबंध का पुनरावलोकन हिंदू धार्मिक परंपराओं की स्थायिता का प्रतिबिम्बित करता है। पुराणिक पाठों मेंए जबकि सूर्य के चरित्र की पौराणिक आयामों का विस्तार किया जाता हैए तो उसमें वैदिक ग्रंथों से विरासत मिली मौलिक अनुष्ठानों और दार्शनिक आधारों को भी संजोकर रखा गया है।

➢ सूर्य उपासना की सामान्य विशेषताएँ

सूर्य पूजा में अनुष्ठानों, प्रथाओं, वास्तुशिल्प चमत्कारों और त्योहारों की एक विविध श्रृंखला शामिल है जो हिंदू धर्म के भीतर सौर देवता के प्रति गहरी श्रद्धा और भक्ति को दर्शाती है।

• सूर्य पूजा से जुड़े अनुष्ठान और प्रथाएँ

सूर्य पूजा के अनुष्ठान अपनी जटिलता और औपचारिकता में भिन्न–भिन्न होते हैं, लेकिन वे अक्सर सूर्य को प्रतिष्ठित करने वाले पवित्र वस्त्रों के चारों ओर अर्घ्य (पानी का अर्घ्य), मंत्र जप और प्रदक्षिणा (प्रदक्षिणा) के साथ संबंधित होते हैं। भक्तजन सूर्य देवता से आशीर्वाद प्राप्त करने के लिए फूल, फल, अनाज और अन्य प्रतीकात्मक अर्पण भी कर सकते हैं। सूर्य को समर्पित स्तोत्रों का पाठ, जैसे कि आदित्य ह्रदयम और गायत्री मंत्र, सूर्य पूजा के अनुष्ठान का एक महत्वपूर्ण हिस्सा बनता है। इसके अलावा, सूर्य नमस्कार, सूर्य का सलामी, शारीरिक आसनों को धार्मिक इशारों के साथ मिलाकर योग का एक प्रतिष्ठित रूप है, जो सूर्य देवता के प्रति कृतज्ञता और श्रद्धा का प्रतीक होता है।

• सूर्य को समर्पित मंदिर और उनकी स्थापत्य विशेषताएं

AIRO JOURNALS
Free / Unpaid
Peer Reviewed
Multidisciplinary
National
ISSN: 2321-3914
Volume: 4 Issue:3
December 2023
Impact Factor: 11.9
Subject: Sanskrit

भारत और हिन्दू संस्कृति के प्रभावित क्षेत्रों में सूर्य को समर्पित मंदिर, जिन्हें सूर्य मंदिर या सूर्य नारायण मंदिर के रूप में जाना जाता है, भारतीय भूमि को अलंकृत करते हैं। इन मंदिरों में विभिन्न वास्तुशैलियाँ प्रदर्शित की जाती हैं, जो प्राचीन पत्थरी संरचनाओं से लेकर जटिल भव्य मंदिर संरचनाओं तक का स्वरूप रखती हैं, जिन्हें जटिल उकेरे और मूर्तिकला से सजाया गया है। वास्तुशिल्पी विशेषताएं अक्सर एक पवित्र गृह (गर्भगृह) को शामिल करती हैं, जिसमें सूर्य की छवि या मूर्ति होती है, जो सूर्य के साथ जुड़े अन्य स्वर्गीय देवताओं के संबंध में सहायक मंदिरों के बीच घिरी होती है। उड़ीसा के कोणार्क सूर्य मंदिर, जिसमें सूर्य के कथानक से लिए गए संवेदनशील उकेरे के साथ प्रतीकात्मक रथाकार ढांचे से भरा होता है, सूर्य मंदिरों के गौरव और वास्तुकला की सुंदरता का साक्षी है।

- **सूर्य का सम्मान करने वाले त्यौहार और अनुष्ठान**

हिन्दू धर्म में कई त्योहार और अवलोकन सूर्य को समर्पित हैं, जो उसकी भौतिक ज्योति, गरमी और जीवन के स्रोत के रूप में उसकी भूमिका का जश्न मनाते हैं। इनमें से सबसे प्रमुख त्योहार छठ पूजा है, जो मुख्य रूप से बिहार, झारखंड, और उत्तर प्रदेश के राज्यों में मनाया जाता है। छठ पूजा एक प्राचीन त्योहार है जो सूर्य देवता की पूजा के समर्पित है और चार दिनों तक के विस्तृत अनुष्ठानों को शामिल करता है, जिसमें उपवास, पवित्र नदियों में स्नान, और सूर्य को उगते और अस्त होने के समय पूजा देना शामिल होता है। अन्य त्योहारों में रथ सप्तमी और मकर संक्रांति भी हैं, जो सूर्य की आकाशीय यात्रा का समर्थन करते हैं और सौर कैलेंडर में महत्वपूर्ण खगोलीय घटनाओं को चिह्नित करते हैं।

साहित्य की समीक्षा

ग्रिसवोल्ड (1923) ने दयालुता के साथ विज्ञान का पीछा किया। उन्हें भारत की बहुपेशी बौद्धिक और सामाजिक उपलब्धियों को समझना और मूल्यांकन करना है। उन्हें यह समझ में आता है कि घटनाओं का इतिहासिक संदर्भ के बिना विश्लेषण करना निरर्थक है। यह सत्य सभी आधुनिक धार्मिक विशेषज्ञों द्वारा साझा किया जाता है, चाहे उनकी प्रतिष्ठा कितनी भी हो। हर व्यवस्था को समझने के लिए, उन्हें यह मानते हैं कि व्यक्तिगत और सामाजिक अस्तित्व के धार्मिक प्रभाव को मापने के लिए उसके प्रैक्टिकल गुणों का मूल्यांकन करना होगा। इस तरह, उन्हें भारतीय धर्म के साथ उनके निकट संबंधों ने महत्वपूर्ण जानकारी प्रदान की है। एक समुदाय के धार्मिकता का वर्णन करने में एक छात्र को संवाद के बिना कठिनाई हो सकती है।

AIRO JOURNALS
Free / Unpaid
Peer Reviewed
Multidisciplinary
National
ISSN: 2321-3914
Volume: 4 Issue:3
December 2023
Impact Factor: 11.9
Subject: Sanskrit

म. सुकदावेन (2012) ने दावा किया कि ईपिक्स, पुराण, और वेदों में कई देवताओं का उल्लेख है। देवताओं की एक श्रेणी नाम और जिम्मेदारियों को साझा कर सकती है। अन्य देवताएँ पंछी, पशु, लोग, या दोनों के समान दिखती हैं। यह अवतार कभी–कभी एक अवतार होता है। शोधकर्ता ने पुराणों से भारतीय देवता के विकास का अध्ययन किया और इसे वेदों से व्यवस्थित साहित्य समीक्षा का उपयोग करके किया। उन्होंने दावा किया कि हिंदू देवताओं का विकास लोगों ने अमृतता की खोज की वजह से हुआ। वेदों में इस हिंदू देवताओं के बदलाव का संकेत दिया गया है, लेकिन अवतार, जो भगवद गीता और पुराणों में प्रमुख है, इसके साथ है। विद्वान ने अवतार शब्द को स्थापित किया और इन हिंदू देवताओं के मूल और विकास की जाँच की, इन समस्याओं को ध्यान में रखते हुए हिंदू पाठों के माध्यम से। इस अध्ययन का विस्तृत संश्लेषण इस प्रक्रिया का प्रदर्शन करता है, जिसमें कई वेदी देवताओं का कमी, श्अमान्यश देवताओं का वृद्धि, और नई देवताओं का विकास होता है।

त. ओबरलीज (2023) ने इस साहित्यिक प्रयास से धारावाहिक शर्तों को सावधानीपूर्वक निकाले और उन्हें ऋग्वेद के विश्वासियों की दृष्टि से प्रस्तुत किया, जो इस महत्वपूर्ण नए धर्म प्रस्तुति को बनाते हैं। उनका धर्म, समाज, और सामाजिक जीवन एक–दूसरे से प्रेरित थे। यह अधिकार और अनुष्ठानों पर चर्चा करता है। वैदिक संस्कृतियों में उनके जीवनशैली – शांत या मांसाहारी, के आधार पर अधिकार रखते हैं। अनुष्ठान ष्पुरोहितष ऋग्वेदीय देवताओं को चित्रित करते हैं। थॉमस ओबरलीज के इन अधिनियमों का विवेचन रहस्यमय संबंधों को दिखाता है जो हमें देवताओं को समझने में सहायक होते हैं। ऋग्वेद की शब्दावली हमें अब भी हैरान करती है। युद्ध देवता इंद्र के साथ जुड़े ऋग्वेदिक देवताओं के लिए मंत्रों का पाठ करने वाला एक पुरोहित। ऋग्वेद का धर्म उन मौलिक स्रोतों का संदर्भ देता है जिन्होंने इस हिन्दू धर्म को सूचित किया। पुस्तक का विस्तृत विषय सूची अनुसंधान को सरल बनाती है।

अध्ययन का उद्देश्य

- वेदों में सूर्य के चित्रण की जांच करना।
- पौराणिक साहित्य में सूर्य के चित्रण का पता लगाना।
- सूर्य उपासना की सामान्य विशेषताओं का अन्वेषण करना।
- सूर्य पूजा और वैदिक परंपरा के बीच संबंध का विश्लेषण करना।

AIRO JOURNALS
Free / Unpaid
Peer Reviewed
Multidisciplinary
National

ISSN: 2321-3914
Volume: 4 Issue:3
December 2023
Impact Factor: 11.9
Subject: Sanskrit

वेदों में सूर्य

वेदों में, विशेष रूप से ऋग्वेद में सूर्य का चित्रण, सौर देवता की प्राचीन वैदिक समझ और हिंदू ब्रह्मांड विज्ञान और आध्यात्मिकता में उनके महत्व के बारे में गहन अंतर्दृष्टि प्रदान करता है।

- **ऋग्वेद और अन्य वैदिक ग्रंथों में सूर्य के चित्रण की जांच**

रिग्वेद में, सूर्य को सबसे प्रमुख देवताओं में से एक के रूप में पूजा जाता है, अक्सर एक प्रकाशमय स्वर्गीय प्राणी के रूप में चित्रित किया जाता है जो सात घोड़ों द्वारा खींचे गए एक रथ पर सवार है, जो विकर्ण के सात रंगों को प्रतिनिधित करता है। ऋग्वेद में सूर्य को समर्पित कई स्तोत्र हैं, जिन्हें सूर्य सूक्त कहा जाता है, जो सूर्य की उसकी प्रकाश, शक्ति, और जीवन–दायक गुणों की प्रशंसा करते हैं। सूर्य को प्रकाश का स्रोत, गर्मी, और ऊर्जा का स्रोत के रूप में प्रस्तुत किया जाता है, जो अपने प्रकाशमय उपस्थिति से जगत को प्रकाशित करता है। यजुर्वेद और अथर्ववेद जैसे अन्य वैदिक ग्रंथों में भी सूर्य की स्तोत्र और पुकारों का समावेश है, जो उनकी भव्यता के रूप में ब्रह्मांडीय व्यवस्था का नियमन करने वाले एक दिव्य शक्ति के रूप में उनका भूमिका महत्वाकांक्षी करते हैं।

- **सूर्य को समर्पित भजनों और संबंधित अनुष्ठानों का विश्लेषण**

रिग्वेद में सूर्य को समर्पित स्तोत्र न केवल उसके भौतिक गुणों की प्रशंसा करते हैं बल्कि उसकी स्वास्थ्य, समृद्धि, और सुरक्षा के लिए उसकी आशीर्वाद भी प्राप्त करने की प्रार्थना करते हैं। सूर्य की पूजा से जुड़े वैदिक अनुष्ठान अक्सर इन स्तुतियों का पाठ करने के साथ, जल (अर्घ्य), अनाज, और अन्य प्रतीकात्मक अर्पणों के साथ किये जाते हैं। सूर्य की पूजा अनुष्ठानों का क्रियान्वयन करने से माना जाता है कि सूर्य की दिव्य उपस्थिति को प्रेरित किया जाता है, भक्त के लिए आध्यात्मिक प्रकाशन और समृद्धि को बढ़ावा देते हैं। सूर्य नमस्कार, सूर्य की पूजा के वैदिक अनुष्ठानों से उत्पन्न माना जाता है, जो सूर्य देवता के प्रति श्रद्धा और कृतज्ञता का प्रतीक है।

- **वैदिक चिंतन में सूर्य के ब्रह्माण्ड संबंधी महत्व पर चर्चा**

वैदिक धारणा में, सूर्य ब्रह्मांड के व्यावस्था (रित) और सृष्टि के चक्र में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। सूर्य को अक्सर सवितृ के साथ जोड़ा जाता है, जो सृष्टि और पोषण की दिव्य शक्ति का प्रतिनिधित्व करते हैं, जो ब्रह्मांड को जीवन देने वाली मौलिक ऊर्जा का प्रतिबिम्ब है। सूर्य का सूर्योदय से सूर्यास्त तक का गतिविधि

AIRO JOURNALS
Free / Unpaid
Peer Reviewed
Multidisciplinary
National
ISSN: 2321-3914
Volume: 4 Issue:3
December 2023
Impact Factor: 11.9
Subject: Sanskrit

अस्तित्व के चक्रिक स्वरूप के लिए एक उपमा के रूप में माना जाता है, जो जन्म, वृद्धि, क्षय, और पुनर्जीवन की शाश्वत ध्वनि को प्रतिबिम्बित करती है। सूर्य के रथ की यात्रा आकाश में एक समय और ब्रह्मांडीय व्यवस्था का प्रतीक होती है, सभी जीवन रूपों के आपसी संबंध और ब्रह्मांड की समरस संतुलन को जोरदार देते हैं।

पुराणों में सूर्य

पौराणिक साहित्य में सूर्य का चित्रण मिथकों, किंवदंतियों और कथाओं की एक समृद्ध टेपेस्ट्री का खुलासा करता है जो सौर देवता के चरित्र को सुशोभित करता है, और भक्तों और विद्वानों की धार्मिक कल्पना को समान रूप से समृद्ध करता है।

- **पौराणिक साहित्य में सूर्य के चित्रण की खोज**

पुराणिक पाठों, जैसे महाभारत, रामायण, और विभिन्न पुराण, सूर्य के बहुपहलुवीय प्रतिनिधित्व प्रस्तुत करते हैं, जिन्हें विशाल शक्ति और महत्व की देवता के रूप में चित्रित किया गया है। इन पाठों में, सूर्य को अक्सर विभिन्न प्रतिष्ठानों के पिता के रूप में चित्रित किया जाता है, जैसे सूर्यवंश और महान व्यक्तियों में लॉर्ड राम और लॉर्ड कृष्ण। सूर्य की भूमिका एक स्वर्गीय प्राणी की से बाहर बढ़ती है, क्योंकि वह सृष्टि, वीरता, और दिव्य हस्तक्षेप के काव्यात्मक कथाओं में उलझ जाते हैं।

- **सूर्य से जुड़े मिथकों, किंवदंतियों और आख्यानों की जांच**

पुराणिक साहित्य सूर्य के चारित्र और गुणों को समझने में गहराई से योगदान देती है, जिसमें सूर्य के चारित्र में विभिन्न मिथक और किस्से भरपूर होते हैं। एक ऐसी प्रसिद्ध पौराणिक कथा में, सूर्य की शादी संज्ञा (जिसे संज्ञा भी कहा जाता है) से होती है और उसके पश्चात छाया (प्रतिबिंब) के साथ संयोजन होता है, जिससे महत्वपूर्ण देवताओं जैसे यम, शनि, और अश्विनी का जन्म होता है। एक और प्रमुख कथा है जिसमें बताया गया है कि हनुमान, भक्तिभाव से भरी बंदर देवता, सूर्य को एक पके फल की भांति खाते हुए दिव्य शक्तियों को प्राप्त करते हैं, इसे भ्रमित करके। ये मिथक और किस्से न केवल सूर्य की दिव्य शक्ति को प्रदर्शित करते हैं बल्कि उनके अन्य देवताओं और पौराणिक प्राणियों के साथ उनके जटिल संबंधों को भी प्रकट करते हैं।

AIRO JOURNALS
Free / Unpaid
Peer Reviewed
Multidisciplinary
National
ISSN: 2321-3914
Volume: 4 Issue:3
December 2023
Impact Factor: 11.9
Subject: Sanskrit

- **सूर्य की पूजा और विशेषताओं पर प्रकाश डालने वाले प्रमुख पौराणिक ग्रंथों की पहचान**

पुराणों में विशेष देवताओं को समर्पित पाठ, जैसे सूर्य पुराण और रामायण से एडिटिया ह्रदयम, सूर्य की पूजा और गुणों के भंडार के रूप में कार्य करते हैं। सूर्य पुराण, विशेष रूप से, सूर्य की पौराणिक कथाओं, प्रतिमा विग्रह, और उसकी पूजा से संबंधित अनुष्ठानों का विस्तृत वर्णन प्रदान करता है। रामायण में पाया जाने वाला एडितिया ह्रदयम, जो सूर्य को समर्पित है, भगवान राम द्वारा रावण के साथ अंतिम युद्ध से पहले सूर्य के आशीर्वाद को आह्वान करने के लिए पढ़ा जाता है। ये पाठ सूर्य पूजा के धार्मिक और भक्तिक विषयों को समझने के लिए मौलिक स्रोत के रूप में काम करते हैं पुराणिक परंपरा के अंतर्गत।

सूर्य पूजा और वैदिक परंपरा के बीच संबंध

सूर्य पूजा और वैदिक परंपरा के बीच का संबंध धार्मिक प्रथाओं, विश्वासों और दार्शनिक अंतर्दृष्टि की एक गतिशील निरंतरता को दर्शाता है जो हिंदू धर्म के भीतर सहस्राब्दियों से विकसित हुई है।

1. **वेदी समय से पुराणिक काल तक सूर्य पूजा में समानताएँ और परिवर्तन**

- **समानताएँ** सूर्य पूजा वेदी अनुष्ठानों और स्तुतियों से निकटता बनाए रखती है, जैसे सूर्य सूक्त का पाठ और सूर्य नमस्कार का क्रियान्वयन। सूर्य का श्रद्धापूर्वक समर्थन जैसे कि प्रकाश, गर्मी, और जीवन का स्रोत, वेदीकाल से पुराणिक युग में बनाए रहता है, हालांकि यह विवरण और पुनर्विवेचन के साथ होता है।
- **परिवर्तन** पुराणिक साहित्य नए कथाओं, मिथकों, और सूर्य के आसपास अन्य अनुष्ठानों को प्रस्तुत करता है, जो उसके चरित्र को समृद्ध करते हैं और हिन्दू पौराणिक कथा के भीतर उसकी भूमिका को विस्तारित करते हैं। पुराणों में सूर्य का चित्रण, उसके प्रमुख वंशों से संबंध, और महाकाव्य कथाओं में उसकी भागीदारी में काफी विस्तार और सजावट होती है।

2. **वेदी अनुष्ठानों और अवधारणाओं का पुराणिक सूर्य पूजा पर प्रभाव**

- वेदी अनुष्ठान, जैसे कि जल (अर्घ्य) का प्रदान और स्तुतियों का पाठ, पुराणिक सूर्य पूजा की मौलिक प्रथाओं का हिस्सा बनते हैं। ये अनुष्ठान, हालांकि संरक्षित होते हैं, अक्सर पुराणिक परंपरा में अधिक विस्तृत कार्यक्रमीय परिस्थितियों में एकीकृत किए जाते हैं।

AIRO JOURNALS
Free / Unpaid
Peer Reviewed
Multidisciplinary
National
ISSN: 2321-3914
Volume: 4 Issue:3
December 2023
Impact Factor: 11.9
Subject: Sanskrit

- वेदों में सूर्य का ब्रह्माण्डीय महत्व, जो की ब्रह्माण्डीय क्रम (रिता) और सृष्टि के चक्र का प्रतिनिधित्व करता है, पुराणिक सूर्य पूजा पर प्रभाव डालता है। पुराणिक पाठ इन अवधारणाओं को विस्तारित करते हैं, उन्हें सृष्टि, पोषण, और दिव्य हस्तक्षेप के व्यापक कथाओं में बुनते हैं।

3. व्यापक हिंदू धार्मिक ढांचे में सूर्य का समन्वय और एकीकरण

- पुराणिक सूर्य पूजा में एक अद्वितीय समान्वय दिखाई देता है, जो विभिन्न धार्मिक परंपराओं और क्षेत्रीय प्रथाओं से तत्परता ताकता है। स्थानीय देवताओं, अनुष्ठानों, और रीतियों का सूर्य पूजा में अवशोषण, हिंदू धार्मिक परंपराओं की अनुकूलता को दर्शाता है।
- पुराणिक साहित्य में सूर्य का विशाल हिन्दू धार्मिक परंपराओं में एकीकरण स्पष्ट है। सूर्य को अन्य प्रमुख देवताओं जैसे विष्णु और शिव के साथ जोड़ा जाता है, पुराणिक साहित्य में। सूर्य को अक्सर इन मुख्य देवताओं के रूप या प्रतिबिंब के रूप में चित्रित किया जाता है, जिससे उसका दिव्य पंथन के साथ संबंध को जोर दिया जाता है।

निष्कर्ष

इस अनुसंधान से पुराणिक धर्म में सूर्य की पूजा की महत्वपूर्णता और इसके वेदी विरासत से जुड़े संबंधों का प्रकाश मिला है। साहित्यिक स्रोतों और विद्वानों की व्याख्याओं का विश्लेषण करके कई महत्वपूर्ण निष्कर्षे निकाली गई हैंरू

पुराणिक साहित्य में सूर्य को एक जटिल प्रकार में प्रस्तुत किया गया है, जिसमें उसे एक शक्तिशाली और महत्वपूर्ण देवता के रूप में प्रदर्शित किया गया है जो सृष्टि और वीरता के कथाओं को एक साथ बुनता है।

हालांकि पुराणों में सूर्य के चरित्र में पौराणिक तत्व, अनुष्ठान, और गुण जोड़े गए हैं, वे फिर भी वेदी साहित्य से आये मौलिक अनुष्ठानिक और दार्शनिक सिद्धांतों को बनाए रखते हैं।

सूर्य की पूजा विभिन्न हिंदू धार्मिक परंपराओं का प्रतिबिंब है, जिसमें इसकी जटिल अनुष्ठान, मंदिर निर्माण, और सूर्य देवता की पूजा के लिए समर्पित त्योहार शामिल हैं।

विचार करते समय, सूर्य की भक्ति कृ जो जीवन, प्रकाश, और आध्यात्मिक जागरूकता का प्रतिनिधित्व करता है कृ हिन्दुओं के लिए बहुत महत्वपूर्ण रहती है। सूर्य की पूजा से न केवल भक्ति मजबूत होती है, बल्कि इससे धार्मिक और सांस्कृतिक परंपराओं को भी संरक्षित किया जाता है।

AIRO JOURNALS
Free / Unpaid
Peer Reviewed
Multidisciplinary
National
ISSN: 2321-3914
Volume: 4 Issue:3
December 2023
Impact Factor: 11.9
Subject: Sanskrit

आगे बढ़कर, इस क्षेत्र में और अधिक अनुसंधान और अन्वेषण में, सूर्य पूजा के ऐतिहासिक विकास, रीजनल भिन्नताओं में अनुष्ठानों और प्रथाओं, और हिंदू समाज पर सूर्य पूजा के सांस्कृतिक प्रभाव में और गहराई से गवाही देने की संभावना है। इसके अलावा, इतिहास, मानवशास्त्र, और धार्मिक अध्ययन से परिप्रेक्ष्यों को मिलाकर बहु–विज्ञानी अध्ययन पूर्णतः दृष्टिकोण प्रदान कर सकते हैं। सूर्य पूजा के गतिविधियों की जटिलताओं को खोलते रहने से, हम हिंदू धार्मिक परंपराओं को और अधिक समझ सकते हैं और उनके समकालीन समाज में स्थायित्व को समझ सकते हैं।

संदर्भ

1. क्लेटन, ए.सी. ऋग्वेद और वैदिक धर्म, जिसमें ऋग्वेद से चयनित अंश शामिल हैं। बनारसी दास और कंपनी पब्लिशर्स, दिल्ली, 1981 (1913)।
2. गोपाल, राम. ऋग्वेद की व्याख्या का इतिहास और सिद्धांत। कांसेप्ट पब्लिशिंग कंपनी, 1983।
3. गोयल, एस.आर. प्राचीन भारत का धार्मिक इतिहास, खंड II, कुसुमांजलि पब्लिशर्स, दिल्ली, 1995।
4. ग्रिसवोल्ड, हर्वे डी विट. ऋग्वेद का धर्म, खंड 8, एच. मिलफोर्ड, ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, 1923।
5. जोशी, महादेव नारायणराव. ऋग्वेद में गायत्री। रुपा पब्लिकेशंस, धारवाड़, 2001।
6. राजा, कुञ्जुन्नी, और एम.एस. मेनन. संस्कृत साहित्य का इतिहास, खंड I और II, केरल साहित्य अकादमी, त्रिशूर, 2002 (1990)।
7. मैकडॉनेल, ए.ए. वैदिक मिथकशास्त्र। मोतीलाल बनारसीदास पब्लिशर्स, दिल्ली, 1995 (1898)।
8. महुलीकर, गौरी. पुराणिक मंत्रों और अनुष्ठानों में वैदिक तत्व। नागा पब्लिशर्स, दिल्ली, 2000।
9. नाम्बीसन, टी. नारायणन, अनुवादक. भारतीय दर्शन। मातृभूमि प्रिंटिंग और पब्लिशिंग, कालीकट, 1996।
10. नीलकंदन, सी.एम. श्रुतिसौरभम्। पंचांग पुस्तकालय, कन्नमकुलम, 2005।
11. ओबर्लीस, थॉमस. ऋग्वेद का धर्म। ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, 2023।
12. पिपरिया, राम के. वैदिक मन। इंडसविस्टा एडिशन्स, मुंबई, 2004।
13. प्रसाद, सी., संपादक. हिंदू एन्साइक्लोपीडिया। रेनबो बुक पब्लिशर्स, त्रिवेंद्रम, 2004।
14. रामांकुट्टी, पी.वी. वेददीपिका। पंचांग पुस्तकालय, कन्नमकुलम, 2008।
15. सुकदवन, मनीराज. "हिंदू देवताओं के अवतार के विचार के विकास में व्यवस्थित समझ।" डच रिफॉर्म्ड थियोलॉजिकल जर्नल = नेदेरडुइट्से गेरेफॉर्मेर्डे थियोलोगीसे तिएद्सक्रिफ्ट, खंड 53, संख्या 1–2, 2012, पृष्ठ 208–218।

AIRO JOURNALS
Free / Unpaid
Peer Reviewed
Multidisciplinary
National

ISSN: 2321-3914
Volume: 4 Issue:3
December 2023
Impact Factor: 11.9
Subject: Sanskrit

Author's Declaration

I as an author of the above research paper/article, here by, declare that the content of this paper is prepared by me and if any person having copyright issue or patent or anything otherwise related to the content, I shall always be legally responsible for any issue. For the reason of invisibility of my research paper on the website /amendments /updates, I have resubmitted my paper for publication on the same date. If any data or information given by me is not correct, I shall always be legally responsible. With my whole responsibility legally and formally have intimated the publisher (Publisher) that my paper has been checked by my guide (if any) or expert to make it sure that paper is technically right and there is no unaccepted plagiarism and hentriacontane is genuinely mine. If any issue arises related to Plagiarism/ Guide Name/ Educational Qualification /Designation /Address of my university/ college/institution/ Structure or Formatting/ Resubmission /Submission /Copyright /Patent /Submission for any higher degree or Job/Primary Data/Secondary Data Issues. I will be solely/entirely responsible for any legal issues. I have been informed that the most of the data from the website is invisible or shuffled or vanished from the database due to some technical fault or hacking and therefore the process of resubmission is there for the scholars/students who finds trouble in getting their paper on the website. At the time of resubmission of my paper I take all the legal and formal responsibilities, If I hide or do not submit the copy of my original documents (Andhra/Driving License/Any Identity Proof and Photo) in spite of demand from the publisher then my paper maybe rejected or removed from the website anytime and may not be consider for verification. I accept the fact that as the content of this paper and the resubmission legal responsibilities and reasons are only mine then the Publisher (Airo International Journal/Airo National Research Journal) is never responsible. I also declare that if publisher finds Any complication or error or anything hidden or implemented otherwise, my paper maybe removed from the website or the watermark of remark/actuality maybe mentioned on my paper. Even if anything is found illegal publisher may also take legal action against me.

KRISHNA MALLIK

*****